

फिरोज़ खाँ ख्वाजासरा का मकबरा (लगभग 1647 ई०)

यह फिरोज़खाँ ख्वाजासरा का मकबरा है। वह शाहजहाँ के हरम (रनिवास) का प्रबन्धकर्ता था और उसने बड़ी निष्ठा से उसकी सेवा की थी। उसकी 1647 ई० में मृत्यु हुई। यह मकबरा उसने अपनी जीवनकाल में ही बनवा लिया था। यह उसी के नाम पर प्रसिद्ध 'ताज फिरोज़ खाँ' के पश्चिमी किनारे पर बना हुआ है। इसकी योजना बड़ी अनूठी है। इसमें द्वार को अलग बनाने की बजाय उसे मुख्य इमारत की पूर्वी भुजा से सम्बद्ध कर दिया गया है और मकबरे की मुखार पर ईवान बनाने की बजाय, वहाँ विस्तीर्ण शीढ़ियाँ बनाई गयी हैं जो प्रथम तल, अर्थात् छत के ऊपर तक आती हैं। इस प्रकार यह इस मकबरे का प्रमुख तल है, भूमितल जिसमें एक तहखाने में कब्र है, गौण हो गया है।

यह छत अष्टास्र है और इसकी प्रत्येक भुजा 42 फीट लम्बी है। इसके उत्तरी और दक्षिणी भुजाओं पर चार-चार खम्भों की आयताकार चौखंडियाँ बनी हैं जिन पर तोड़े और छज्जे लगे हैं। इनकी चौखंडीदार छतों पर मूल रूप से रंगीन काचित-खर्पर-कला का अलंकरण किया गया था। पश्चिम की ओर तीन मेहराबों की एक त्रिमुखी मस्जिद है। इसमें भी तोड़े और छज्जे लगे हैं और इसकी छत भी चौखंडीदार है। इसकी छत पर भी रंगीन काचित-खर्पर लगे थे। छत के मध्य का भवन भी जिसमें नकली कब्र है, अष्टास्र है। इसके आठों ओर महराबदार द्वार हैं जिनमें से दक्षिण की ओर के प्रवेश द्वार छोड़कर शेष सातों महराब जाली फलकों से बन्द थे। सुन्दर अरबीसम, ज्यामितिक और शैलीकृत बेलबूटेदार-डिजाइन कुर्सी, चापरकन्धों और इजारों के फलकों पर उत्कीर्ण हैं। रंगीन प्रभाव हेतु लाल पत्थर के साथ भूरे रंग के पत्थर का प्रयोग किया गया है। इसके ऊपर भी सुन्दर तोड़ों पर आधारित छज्जा है। सबसे ऊपर अर्धवृत्ताकार गुम्बद है जो कोणों से उठते हुए निर्यूहों से आच्छादित है। इस गुम्बद पर भी मूल रूप से रंगीन काचित-खर्पर कला द्वारा अलंकरण किया गया था। इसके शीर्ष पर कलश लगा है।

इस मकबरे का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग दुमंजिला द्वार है जो इसकी पूर्वी भुजा से सम्बद्ध है। इसके पार्श्वों में खुले हुए महाराबदार कक्ष हैं। ऊर्ध्वरचना की दोनों छत्रियाँ अब नष्ट हो गयी हैं। इस द्वार-भवन की सब बाहरी दीवारों पर महाराबदार फलकों में उद्भृत-तक्षण पद्धति से बड़े सुन्दर घटपल्लव उत्कीर्ण किये गये हैं। इसकी उत्तरी और दक्षिणी ओर की दीवारों के फलक विशेष रूप से दर्शनीय हैं। उनमें गुलदस्तों और कलशों में कमल और हंस दिखाये गये हैं और बड़े सुन्दर बेलबूटेदार डिजाइन बनाये गये हैं।

यह इमारत पूर्णतया लाल पत्थर की बनी है। इसमें श्वेत संगमरमर का प्रयोग नहीं हुआ है। अलंकरण केवल तक्षणकला द्वारा हुआ है। इसकी अनोखी योजना और अत्यन्त शैलीकृत अरबीसम और बेलबूटेदार डिजाइन के दृष्टिकोण से फिरोज़ खाँ ख्वाजासरा का यह मकबरा मुगल स्थापत्य के इतिहास में अनूठा है। यह इमारत भारत सरकार के भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा विधिवत् संरक्षित है।



Tomb of Firoz Khan Khwajasara (C. 1647 A.D.)

This is the Tomb of Firuz Khan Khwasara (C. 1647 A.D.) who was caretaker of Shahjehan's Harem (Raniwas) and served him faithfully. He died in 1647. It was built by Firuz Khan himself in his lifetime. It stands on the west side of the tank which now bears his name. Its plan is unique. Instead of providing the gateway separately, it has been attached to the eastern side of the main building, and instead of an iwan leading into the Mausoleum, a broad staircase has been provided which leads above on the first floor terrace which is thus its main storey. The ground floor is only a subsidiary storey, containing the grave in the tahkhanah (crypt).

This terrace is octagonal and measures 42 feet side identical, four pillared rectangular chaukhandis are there on its north and south sides, they are protected by brackets and chhajja. Their four sided pyramidal roofs were originally glazed-tiled. The western side has a trimukhi (three-arched) mosque, with brackets and chhajja and chaukhandi roof which was also originally glazed-tiled. The central pavilion which contains a cenotaph is also octagonal. It has arched openings on all the eight sides, seven of which leaving the entrance on the south side, were originally closed by jali panels. Beautiful Arabesque, geometrical and stylized floral designs have been carved on the panels of the plinth, spandrels and dados. Grey stone is used with red stone for a beautiful colour effect. It is protected above by a chhajja supported on richly carved brackets and is roofed by a semi-circular dome, which is flanked on the angles by pinnacles. The dome was also originally glazed-tiled. It is crowned by kalash finial.

The most imposing member of this mausoleum is the two storeyed gateway attached to its eastern side. It has open arched chambers on the sides. The two chhatris of the superstructure have been destroyed. The whole of the exterior mural surface of this gate has been panelled and bears arched

niches, some of which contain vase-and-foliage compositions in high relief. Particularly noticeable are the panels on its north and south sides. They depict lotus and swan with guldastas and vases and beautiful scroll patterns.

It is entirely built of red sandstone and there is no white marble. Stone carving is the only mode of ornamentation employed here. From the point of view of its unusual plan and use of highly stylized Arabesque and floral designs, in stone carving with total absence of calligraphic art, the tomb of Firuz Khan Khwajasara stands unique in the history of Mughal architecture. The building is protected by Archaeological Survey of India (Govt. of India).

